Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 29/March/2024 IJRAW: 2024; 3(5):58-60 Accepted: 03/May/2024

विन्ध्य क्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति का वर्णन

*[1]डॉ. अनिल कुमार यादव

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व विभाग पी0जी0 कालेज, पट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में विन्ध्य क्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति का अध्ययन किया गया है क्योंकि उत्खनन से प्राप्त वस्तुओं के आधार पर कोलडिहवा, महगड़ा, पंचोह और चोपानी माण्डो के विषय में जानकारी प्राप्त होती है क्योंकि एम0ए0 के छात्रों को इस अध्याय को समझने के लिए सरल शब्दों में बताने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः कोलडिहवा, महगड़ा, बेलन, उपकरण

प्रस्तावना

उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र के गंगा के मैदानी भू–भाग तथा मध्य भारत की पर्वतीय क्षेत्र से नवपाषाणकालीन पुराअवशेष प्राप्त हुए हैं। ये उपकरण मिर्जापुर, बांदा, रीवा का त्यौहार तथा सीधी (म0प्र0) जनपदों से नवपाषाणयुगीन पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं। 1972–73 और उसके बाद इलाहाबाद जिले के मेजा तहसील में स्थित पहाड़ी नदी बेलन घाटी में कोलडिहवा, पंचोह, महगडा तथा चोपारी मांडो तथा मध्य प्रदेश के सीधी जिले में सोन नदी की घाटी में स्थित कुन्झुन एवं लालानहिया नामक पुरास्थल प्रकाश में आ चुके हैं। [1]

कोलडिहवा पुरास्थल

सामान्य हिन्दी में अर्थ–धान का कटोरा भी बोला जाता है। 1964 में कोलडिहवा नामक पुरास्थल का उत्खनन कार्य शुरू किया गया। यह इलाहाबाद से दक्षिण पूर्व दिशा में 85 किमी की दूरी पर मेजा तहसील से बेलन के बायें तट पर स्थित है। इस टीले की लंबाई पूर्व से पश्चिम 500 मीटर तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण 200 मीटर है किन्तु बेलन नदी तथा उसे सहायक नालों के निरन्तर अपरदन के फलस्वरूप अब यह अनेक छोटे–छोटे टीलों में विभक्त हो गया है। कालानुक्रम को जानने के उद्देश्य से यहां पर अत्यन्त सीमित उत्खनन किया गया था। इस टीले का 1.90 मीटर मोटे सांस्कृतिक जमाव के उत्खनन के फलस्वरूप निम्नलिखित तीन सांस्कृतिक कालों का पता [2] चलता है।

1. नव पाषाणिक संस्कृति
2. ताम्र पाषाणिक संस्कृति
3. आरम्भिक ऐतिहासिक काल की लौह युगीन संस्कृति

महगड़ा

महगड़ा इलाहाबाद के मेजा तहसील से बूढ़ी बेलन के संगम के पश्चिम में कोलडिहवा के सामने, नई बेलन धारा के बाये तट पर स्थित है। चोपानी माण्डो से यह दक्षिण पश्चिम दिशा में 03 किमी भी दूरी पर है। महगडा लगभग अण्डाकार है तथा इसका क्षेत्र विस्तार लगभग 8000 वर्ग फीट है। इसके दक्षिण–पूर्व में बूढ़ी बेलन तथा दक्षिण पश्चिम में नदी धारा है। इसके अलावा सभी दिशाओं में यह एक प्राकृतिक कटक; त्पकहमद्ध में सुरक्षित है। इसकी खोज 1975–76 में हुई थी। 1976 से 1978 तक यहां पर क्षैतिज उत्खनन किया गया। जिससे यहां की नवपाषाणिक संस्कृति के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। महागड़ा एकांकी सांस्कृतिक स्थल; ैपदहसम ब्नसजनतम पजमद्ध है इसका सांस्कृतिक जमाव 2.60 मीटर था। [3]

पंचोह जो कोलडिहवा के उत्तर–पश्चिम में लगभग 2.50 किमी की दूरी पर बेलन नदी के दाहिने तट पर स्थित है। यहां पर 1975–76 से सीमित पैमाने पर उत्खनन कराया गया। जिससे 60 सेमी मोटा नव पाषाणिक जमाव

*Corresponding Author: डॉ. अनिल कुमार यादव

प्रकाश में आया है। यह भी एकांकी संस्कृति वाला पुरास्थल है।

कोलडिहवा, महगड़ा तथा पंचोह के उत्खनन से विन्ध्य क्षेत्र में निवास करने वाले नवपाषाणयुगीन मानव के आवासों का पता चलता है। कोलडिहवा से एक निश्चित क्रम विन्यास में स्तम्भ गर्त मिले हैं। जिनसे यह प्रतीत होता है कि इस काल के लोग इन गर्तों में लकड़ी के लट्ठे को गाडकर, जमीन के ऊपर झोपड़ीनुमा अपना घर निर्मित किया करते थे। प्रायः झोपड़ियां अण्डाकर अथवा गोलाकार बनाई जाती थी। जिनका व्यास 4.30 से 06.40 होता था। इन्हें घास–फूस के छाजन किया जाता था। इनकी दीवारें सरकंडे से बनाई जाती थी, जिनके ऊपर मिट्टी का लेप कर दिया जाता था। इनके आवासीय निवेश प्रायः गोलाई में मिलते हैं। झोपड़ियों के फर्श पर मृदभाण्ड, पशुओं की हड्डी, सिल–लोढे, लघुपाषाणोपकरण तथा कुल्हाड़ियां आदि मिले। [4]

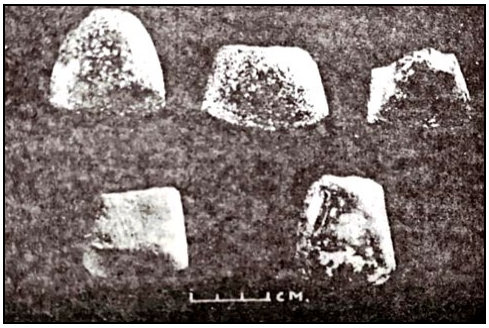

चित्र 1: महगड़ारू पाषाण उपकरण
सौजन्यः डी मण्डल (1980)

ये अपने उपकरणों के निर्माण के लिए बेसाल्ट, ग्रेनाइट तथा क्वार्टजाइट का उपयोग करते थे। इनकी कुल्हाड़ियां छोटी, गोलाकार समन्तात की आयताकार अथवा प्रलम्ब अण्डाकार अनुभाग की पूर्णतया ओपदार होती थी। इनकी औसत लम्बाई, चौड़ाई तथा मोटाई क्रमशः 5.3 सेमी, 4.45 सेमी, 1.90 सेमी है। कुल्हाड़ियों के अतिरिक्त प्राप्त उपकरणों में हथौड़े, छेनी, बसुले, सिल–लोढ़े, चक्रिक–प्रस्तर; ठवतमकैजवदमद्ध तथा गोफन प्रस्तर आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त महागडा से चार एकल–स्कंधितै;पदहसम जंदहमकद्ध हड्डी के शर;। ततवूीमंकद्ध, मिट्टी के छिद्रयुक्त चकरी, गोलाकार मिट्टी की गुरियां, छिद्रयुक्त सीपी की लटकन प्राप्त होते हैं।

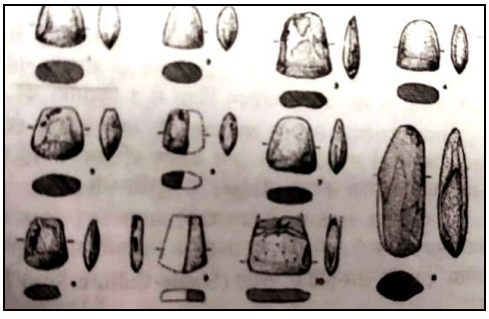

चित्र 2: महगड़ा नवपाशाणिक उपकरण 1–8सेल्ट, 9, छेनी

यहां से प्राप्त मृदभाण्डों को चार भागों में विभाजित किया जाता है। [5]

1. रस्सी छाप मृदभाण्ड; ब्वतक पउचतमेमक च्वजजमतलद्ध
2. चमकदार लाल मृदभाण्ड; ठनतदपीमक त्मकूंतमद्ध
3. खुरदुरे मृदभाण्ड; त्नेजपबंजमकूंतमद्ध
4. चमकदार मृदभाण्ड; ठनतदपीमक ठसंबॉतमद्ध

चित्र 3: कोलडिहवाः डोरी–छाप मिट्टी के बर्तन
सौजन्यः वी. डी. मिश्र (1977)

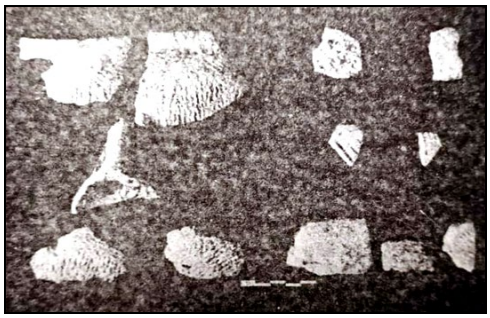

सभी मृदभाण्ड हस्तनिर्मित तथा अधपके हैं। इन मृदभाण्डों को गीली मिट्टी में धान के छिलके को मिलाकर बनाया जाता था। इनका आकार प्रायः मोटा मिलता है। इस काल के पात्रों में गहरे अथवा छिछले कटोरे, छिछले तसले, टोटीयुक्त, तश्तरियां, चौड़ी मुंहवाली हाण्डी एवं घड़े विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। प्रायः इन पात्रों को आड़ी–तिरछी रेखाओं से डिजाइनयुक्त तथा किसी न किसी रूप में रंगा अवश्य गया है। इन पात्रों को भीतर तथा बाहर दोनों ओर रगड़कर चमकाने का भी प्रयास किया गया है। कुछ पात्रों का निचला हिस्सा खुरदुरा मिलता है। बर्तनों पर अलंकरण पट्टी चिपकाकर; ।चचसपुनम इंदकेद्ध का आड़ी–बेड़ी रेखाओं तथा उत्कीर्ण करके किया गया है। कोई भी चित्रित पात्र नहीं मिला है। इनकी अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन एवं आखेट पर निर्भर थी।

धान के प्रमाण मृदभाण्डों के सालन में तथा कार्बनीकृत रूप में मिले हैं। चावल इनका प्रमुख भोज्य था। विष्णुमित्रे तथ ते–जू–चांग ने इनका परीक्षण किया था और अध्ययन के आधार पर बताया कि यह धान ओराइजा सताइवा; व्तलर््ं ेंजपअंद्ध किस्म का है। इसके अतिरिक्त महागडा में सांवा तथा झरबेर की गुठलियां प्राप्त हुई हैं। इस काल का मानव अनाज को संग्रहीत एवं सुरक्षित करने के लिए हस्तनिर्मित मिट्टी के घड़ों का भी निर्माण करने लगा था, जिनके टुकडे उत्खनन से प्राप्त होते हैं। इस काल का मानव शिकारी अथवा संग्रहक अवस्था से निकलकर कृषि एवं अनाज संग्रह की अवस्था में प्रविष्ट हो चुका था। प्रो0 जी0आर0 शर्मा के अनुसार बेलन घाटी में नवपाषाणयुगीन किसानों ने छठी सहस्त्राब्दी ई0पू0 में संसार में प्रारम्भिक चावल उगाने वाले समुदाय का विकास हुआ था।

विन्ध्य क्षेत्र के नवपाषाणिक पुरास्थलों के उत्खनन से पालतू तथा जंगली दोनों प्रकार के पशु अस्थियों के

अवशेष मिले हैं। उत्खनन के समय महगड़ा नामक पुरास्थल से एक पशुशाला अथवा पशुबाड़ा; व्त्व्रैंजपअंद्ध का पता चलता है। महगड़ा की बस्ती के पूर्वी छोर पर 28 स्तंभ गर्तों; च्वेज भ्वसमेद्ध के चिन्ह प्राप्त हुए हैं। इस बाड़े का आकार आयताकार था। इस स्थल की लंबाई 12.5 मीटर तथा चौड़ाई 7.5 मीटर नापी गई है। इसके प्रत्येक स्तम्भ–गर्त की औसत दूरी 1.08 मीटर है। इस बाड़े में कुल तीन दरवाजों का अनुमान लगाया गया है। [6] बाड़े के भीतर रहने वाले मवेशियों तथा भेड़–बकरियों के खुरों के निशान भी मिले हैं। पालतू पशुओं में, जिनके अस्थि अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुई है, भेड़–बकरी, सुअर एवं हिरण मुख्य है। इसके अतिरिक्त प्राप्त अस्थियों में मछली, कछुआ, चिड़िया की प्राप्त होती है। जिनका वे शिकार करके खाते थे।

विन्ध्य क्षेत्र में कोलडिहवा, महगडा तथा पंचोह से अनेक तिथियां उपलब्ध हैं। कोलडिहवा से तीन उपलब्ध तिथियों 6570±210 ई0पू0, 5440±240 ई0पू0, 1330±120 ई0पू0, 1440±10 ई0पू0, 1480±110 ई0पू0 है। इसके अतिरिक्त महगड़ा से उष्मादीप्ति तिथियां है जो क्रमशः 2265 ई0पू0 और 1616 ई0पू0 है। तिथियों की विसंगति के बावजूद यहां की नवपाषाणिक संस्कृति को 3530–3335 से 1565–1265 ई0पू0 के अन्तर्गत रखा जा सकता है। [7]

उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र के नवपाषाणयुगीन गोल समन्तान्त वाली चमकदार प्रस्तर की कुल्हाड़ियां तथा डोरी छाप हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तन देश एवं काल दोनों ही दृष्टि से पूर्वोत्तर बंग्लादेश एवं दक्षिणी पूर्वी एशियाई नवपाषाणकालीन संस्कृति से बहुत कुछ मिलता–जुलता दिखाई देता है। परन्तु कुछ विद्वान दोनों क्षेत्रों में उपलब्ध उपकरणों की समानता के होते हुए भी क्रमबद्धता एवं कालानुक्रम के अभाव के कारण दोनों को स्वतंत्र रूप से विकसित सांस्कृतिक रूप माना गया है। परन्तु समय के साथ सांस्कृतिक कुछ समानता हो सकती है क्योंकि जब विकास लगभग साथ ही चल रहा था। अतः अपेक्षा की जा सकती है कुछ समानता रही होगी।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से यह प्रतीत होता है कि इस काल में मानव कृषि और पशुपालन करने लगा था तथा वह आवास भी बनाने लगा था और समूह में रहने की प्रवृत्ति का विकास अब होने लगा था। इसलिए अधिक संख्या के आवास के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। उपकरणों के द्वारा ये विभिन्न प्रकार के शिकार करते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा, डा0 राधाकान्त, भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियां, परम ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016, पृ0–336।
2. पाण्डेय, डॉ0 जे0एन0, पुरातत्व विमर्श, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद 2017, पृष्ठ 342।
3. दुबे, डॉ0 एच0एन0, भारत की प्रारम्भिक संस्कृतियां एवं सभ्यताएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005, पृ0–44
4. वर्मा, डा0 राधाकान्त, भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियां, परम ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016, पृ0–337–338।
5. दुबे, डॉ0 एच0एन0, भारत की प्रारम्भिक संस्कृतियां एवं सभ्यताएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005, पृ0–45
6. पूर्ववत्।
7. मिश्रा, बी0डी0, पाश्वोद्धत्ति, 1999, पृ–245।